



16

कानपुर, शुक्रवार, 2 जुलाई 2021

कानपुर न्यूज़

www.dinartimes.in

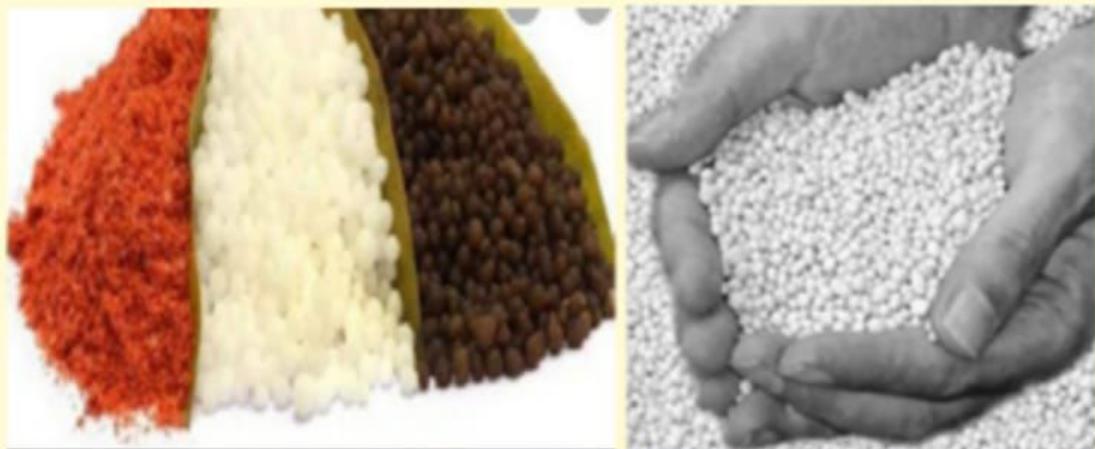
DT दीनार टाइम्स

असली एवं नकली उर्वरकों की पहचान

सीएसए के वैज्ञानिक ने बताई खाद पहचान करने की तकनीक

दीर्घब्रह्म

कानपुर। छंटलेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉंकटर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में मृदा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के नीडिया प्रभारी डॉं खलील खान ने कृषक भाइयों को एखाइजरी जारी करते हुए बताया कि असली एवं नकली उर्वरकों की पहचान घटेलू रुलर पर स्वर्व कृषक भाई एवं उर्वरकों को पहचान घटेलू रुलर पर स्वर्व कृषक भाई कर सकते हैं मृदा वैज्ञानिक डॉंकटर खलील खान ने बताया कि खरीफ का नीसम चल रहा है ऐसे भी किसान भाई खरीफ की फसलों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं इसलिए जरूरी है कि किसान भाई रासायनिक उर्वरकों को जाँच परला लें।



से दाढ़े पिघल जाते हैं आंच को तेज़ कर दें तो हसका कोई अवशेष नहीं बताता है तो किसान भाई समझ लें की ये असली यूट्रिया है डॉंकटर खान बताया कि इसी तरह से डीएपी के कुछ दाढ़ों को हाथ में लेकर उसमें चूना मिलाकर मलने से यदि उसमें तेज़ गंध आवे लगे और सूखना नुस्खिल हो जाए तो समझ ले कि डीएपी असली है दूसरी विधि में

असली यूट्रिया के दाने सफेद और चमकदार होते

तत्पश्चात पतलू में प्रयोग करें। उहोंने कहा कि असली यूट्रिया के दाने सफेद चमकदार और एक समान आकार के होते हैं इसके दाने पानी में पूरी तरह घुल जाते हैं इसके घोल को धूँसे पट ठंडा महसूस होता है तो यह समझा लेवा चाहिए कि यूट्रिया असली है। अयवा यूट्रिया के कुछ दाढ़ों को जर्म तवे पर रखने

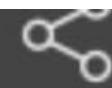
असली डीएपी के दाने तवा पर डालते ही फूल जाएंगे

डीएपी के कुछ दाढ़ों को जर्म तवे पर रखें तब पर दाने अपने आकार से फूल जाते हैं तो समझो कि यह असली डीएपी है इसी प्रकार से



पोटाश के कुछ दाढ़ों को बम करें ऐसा करने पर यह यह दाने आपने में नहीं विषकते हैं तो असली है दूसरी विधि में पोटाश को पानी में

घोलने पर इसका लाल भाज पानी के ऊपर तैरता रहता है डॉंकटर खलील खान ने बताया कि इसी प्रकार जिंक सलेट को डीएपी के घोल में मिलाने से यांबेदार अवक्षेप बन जाता है तो समझ ले कि असली है इसी प्रकार सुपर फारफेट उर्वरक की भी पहचान करने इसके कुछ दाढ़ों को गर्म तवे पर रखें और यदि यह नहीं फूलते हैं तो असली है डॉंकटर खान ने बताया कि छोती-बाढ़ी में उर्वरकों का अपना विशेष महत्व है इससे फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है उहोंने किसान भाइयों से अपील की है कि वे उर्वरक खरीदते समय उर्वरक विक्रेता से रहीद अवश्य ले लें।



उत्तराखण्ड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांघ्य दैनिक समाचार पत्र

जनपात टुके

वर्ष: 12

अंक: 185

देहरादून, शुक्रवार, 02 जुलाई, 2021

पृष्ठ: 08

असली एवं नकली उर्वरकों की घटेलू स्तर पर करें पहचान: डॉ खलील खान

स्थान और (आलोचना)

कानपुर: बंडेश्वर आजाद कूपि एवं प्रीधोगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के मृदा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के मीठिया प्रभारी डॉ खलील खान ने कृषक भाइयों वो एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि असली एवं नकली उर्वरकों की पहचान धरेल रसर पर रखने कृषक भाई कर सकते हैं मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने बताया कि खरीफ का भीसन घल को जांच परख ले तत्पश्चात जल्दी मैं प्रयोग करे उन्होंने कहा कि असली की कालांती में लासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं इसलिए जल्दी है कि किसान भाई रासायनिक उर्वरकों



इसके पोल को घूने पर हँडा बहसुस होता है तो यह समझ लेना चाहिए कि यूरिया के दाने राकेद चमकदार और एक सामान आकार के होते हैं इसके दाने पानी में पूरी तरह भूल जाते हैं

दो तो इसका कोई अपरीण नहीं बतता है तो किसान भाई समझ ले की ये जलती यूरिया है डॉक्टर खान बताया कि हीरी लहू से ढीएपी के कुछ दानों को हाथ में लेकर उसमें चूना गिलाकर मलने से यदि उसमें हेतु गंभ आने लगे और सूखना मुश्किल हो जाए तो समझ ले कि ढीएपी असली है दूसरी विधि में ढीएपी के कुछ दानों को गर्म तथे पर रखी तथे पर दाने आकार से पूल जाते हैं तो समझे कि यह जलती ढीएपी है इसी प्रकार से पोटाश के कुछ दानों को नम करे ऐसा करने पर यह यह दाने आपस में नहीं चिपकते हैं तो असली है दूसरी विधि में पोटाश को पानी में घोलने पर

इसका लल भाग पानी के ऊपर हैरता रहता है डॉ खलील खान ने बताया कि इसी प्रकार जिंक सल्फेट को ढीएपी के धोत में मिलाने से यक्केदार अवश्योप बन जाता है तो समझ ले कि असली है इसी प्रकार सुपर पल्स्फेट उर्वरक जी भी पहचान करने इसके कुछ दानों वो गर्म तथे पर रखें और यदि यह नहीं फूलते हैं तो असली है डॉ खान ने बताया कि खोटी-बाढ़ी में उर्वरकों का अपना विशेष महत्व है इससे फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है उन्होंने किसान भाइयों से अपील की है कि वे उर्वरक खरीदते समय उर्वरक विक्रीता से रसीद अवश्य ले लें।



जन एक्सप्रेस

(janexpresslive)

लखनऊ, उत्तराखण्ड, 03 जुलाई, 2021, वर्ष : 12, अंक : 259, पृष्ठ : 12, ग्रन्थालय ₹ 3.00/-

मुख्यमं

लखनऊ का दैत्यराज ते इक्कीसवाँ तारीख हिन्दी वैभव | www.janexpresslive.com/paper

घटेलू स्तर पर ही किसान स्वयं कर सकते हैं 'असली व नकली उर्वरकों की पहचान'

जन एक्सप्रेस टंकदार

कानपुर नगर। चंद्रशेखर अड्डा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विधानसभालय के कुलपति ढूँढ़ी ढै. आ. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में शुक्रवार को मृदा वैज्ञानिक ढूँढ़ी खलील खान ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि असली एवं नकली उर्वरकों की पहचान घटेलू स्तर पर किसान स्वयं कर सकते हैं खुरोंका का मौसम चल रहा है ऐसे में किसान खारीफ की फसलों में गुणवैधिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं



होने पर समझ लेना चाहिए कि यूरिया असली है।

ढूँढ़ी खान बताया कि किसानों को ढैरेंवे वर्षे पहचान के लिए हथ में ढैरेंवे के कुछ दानों को लेकर उसमें नून मिलाकर मलना चाहिए। इस

किया जे अब उसमें तेज गंभ आने लगे और सुंपना मुश्किल हो जाए तो इसका अर्थ है कि ढैरेंवे असली है जहाँ दूसरी विधि में ढैरेंवी के कुछ दानों को गर्म तरे पर रखने पर अगर दाने अपने अक्सर से फूल जाते हैं तो समझे कि यह असली ढैरेंवी है। उन्होंने बताया कि पोटाश के कुछ दानों को नम करने पर उनका आपस में जा विलगना असली चेटाश की पहचान है। दूसरी विधि में चेटाश को पानी में खोलने पर इसका लाल भाग पानी के ऊपर तैरता रहता है। उन्होंने बताया कि यदि निक सर्केट को ढैरेंवी के घोल में मिलाने से धक्केदार अवश्येम बन जाता है तो समझ ले कि यह असली है। इसी प्रकार मुंग फालेंट उर्वरक की भी पहचान करने के लिए इसके कुछ दानों को गर्म तरे पर रखें और यदि यह जहाँ फूलते हैं तो असली है। ढूँढ़ी खान ने बताया कि खोली-बाटी में उर्वरकों का असल विशेष स्थान है इससे फसलों को उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है उन्होंने किसानों से उर्वरक खुरीदारों समव उर्वरक विक्रेता से रसोइ लेने की अपील की।



असली- नकली उर्वरकों की घरेलू स्तर पर करें पहचान: डॉ. खलील

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मृदा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. खलील खान ने किसानों को एडवाइजरी जारी कर बताया कि असली और नकली उर्वरकों की पहचान घरेलू स्तर पर स्वयं कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि खरीफ का मौसम चल रहा है, ऐसे भी किसान खरीफ की फसलों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं, इसलिए जरूरी है कि वह रासायनिक उर्वरकों को जांच-परख लें। इसके बाद पतलू में प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि असली यूरिया के दाने सफेद चमकदार और एक समान आकार के होते हैं। इसके दाने, पानी में पूरी तरह धुल जाते हैं। इसके घोल को कूने पर ठंडा महसूस होता है तो यह समझ लेना चाहिए कि यूरिया असली है। अथवा यूरिया के कुछ दानों को गर्म तवे पर रखने से दाने पिघल



जाते हैं, आंच को तेज कर दें तो इसका कोई अवशेष नहीं बचता है तो किसान समझ लें कि ये असली यूरिया है। इसी तरह डीएपी के कुछ दानों को हाथ में लेकर उसमें चूना मिलाकर मलने से यदि उसमें तेज गंध आने लगे और सूंघना मुश्किल हो जाए तो समझ ले कि डीएपी असली है। दूसरी विधि में डीएपी के कुछ दानों को गर्म तवे पर रखें, तवे पर दाने अपने आकार से फूल जाते हैं तो समझे कि यह असली डीएपी है इसी प्रकार से पोटाश के कुछ दानों को नम करें, ऐसा करने पर यह यह दाने आपस में नहीं चिपकते हैं तो असली है। दूसरी विधि में

पोटाश को पानी में घोलने पर इसका लाल भाग पानी के ऊपर तैरता रहता है। इसी प्रकार जिंक सल्फेट को डीएपी के घोल में मिलाने से थक्केदार अवच्छेष बन जाता है तो समझ ले कि असली है। सुपर फास्फेट उर्वरक की भी पहचान करने इसके कुछ दानों को गर्म तवे पर रखें और यदि यह नहीं फूलते हैं तो असली हैं। डॉ. खान ने बताया कि खेती-बाड़ी में उर्वरकों का अपना विशेष महत्व है। इससे फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है। उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे उर्वरक खरीदते समय उर्वरक विक्रेता से रसीद अवश्य ले लें।

असली एवं नकली उर्वरकों की पहचान करें किसान, बढ़ेगी फसलों की पैदावार

 यूरिया, डीएपी, पोटाश, जिंक सल्फेट आदि को घरेलू स्तर पर स्वयं जांचे किसान

कानपुर, 2 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज मृदा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने कृषक भाइयों को एडवाइजरी जारी की है। वैज्ञानिक ने बताया कि असली एवं नकली उर्वरकों की पहचान घरेलू स्तर पर स्वयं कृषक भाई कर सकते हैं। खेती-बाजी में उर्वरकों का विशेष महत्व है इससे फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है। अपील की है कि किसान भाई उर्वरक खरीदते समय उर्वरक विक्रेता से रसीद अवश्य लें। मृदा वैज्ञानिक डॉ खान ने बताया कि खरीफ का मौसम चल रहा है ऐसे भी किसान भाई खरीफ की फसलों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं इसलिए जरूरी है कि किसान भाई रासायनिक उर्वरकों को जांच परख लें। तत्पश्चात पतलू में प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि असली यूरिया के दाने सफेद चमकदार और एक समान आकार के होते हैं इसके दाने पानी में पूरी तरह धुल जाते हैं इसके धोल को छूने पर ढंडा महसूस होता है तो यह समझ लेना चाहिए कि यूरिया



डा. खलील खान

असली है। अथवा यूरिया के कुछ दानों को गर्म तवे पर रखने से दाने पिघल जाते हैं आंच को तेज कर दें तो इसका कोई अवशेष नहीं बचता है तो किसान भाई समझ लें की ये असली यूरिया है। उन्होंने बताया कि इसी तरह से डीएपी के कुछ दानों को हाथ में लेकर उसमें धूना मिलाकर मलने से यदि उसमें तेज गंध आने लगे और सूंघना मुश्किल हो जाए तो समझ ले कि डीएपी असली है दूसरी विधि में डीएपी के कुछ दानों को गर्म तवे पर रखें तबे पर दाने अपने आकार से फूल जाते हैं तो समझो कि यह असली डीएपी है। इसी प्रकार से पोटाश के कुछ दानों को नम करें ऐसा करने पर यह यह दाने आपस में नहीं चिपकते हैं तो असली है दूसरी विधि में पोटाश को पानी में धोलने पर इसका लाल भाग पानी के ऊपर तैरता रहता है। डा. खलील खान ने बताया कि इसी प्रकार जिंक सल्फेट को डीएपी के धोल में मिलाने से थक्केदार अवधेप बन जाता है तो समझ ले कि असली है इसी प्रकार सुपर फार्मेट उर्वरक की भी पहचान करने इसके कुछ दानों को गर्म तवे पर रखें और यदि यह नहीं फूलते हैं तो असली हैं।



लाखनऊ टाइपरेटर

वर्ष-05, प्र०-248
सनिकार, 03 जुलाई, 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु^०
प्रकाश, संसार, भासी और देवताहृति के प्राप्तिनि

For epaper → www.updainikbhaskar.com

देश का सबसे विश्वरूपी अखबार

दैनिक भास्कर

असली एवं नकली उर्वरकों की घटेलू स्तर पर पहचान जट्ठाई: डॉ खलील

लाखनऊ लृप्ति

कानपुर। लौस्तर में 2 जुलाई को गुड़ा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के मैटिला प्रभारी डॉ सुलील खान ने कृषक भाइयों को व्यवहारी जारी करने हुए बताया कि असली एवं नकली उर्वरकों वही पहचान घटेलू साम पर स्वास्थ्यक भाई कर सकती है मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने कहा कि खरोफ का नौसम चल रहा है, ऐसे भी किसान खाई खरोफ की फसलों में चाहतायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं इसलिए बहुत ही कि किसान खाई रासायनिक उर्वरकों को जांच परम्परा लें।

लत्यनन्दन पत्रलू में प्रयोग करे। उन्होंने कहा कि असली यूरिया के दाने स्वेच्छ व्यवहार और एक समान आवार के होते हैं इसके दाने दाने में पूर्ण तरह खुल जाते हैं इसके ग्रेल को सूने पर ठंडा महसूस होते हैं तो यह समझ सेना चाहिए कि



यूरिया असली है। अथवा यूरिया के खुले दानों की गर्म तरे पर रखने से दाने लिप्त जाते हैं आंध को तेज कर दें तो इसका कोई लपशेव नहीं बढ़ता है तो किसान खाई समझ सेने को ये असली यूरिया है। डॉक्टर खान बताया कि हर्मी ताह में जीएपी के खुले दानों को हाथ में लेकर उमर्ग नूत्रा वित्तनकर मलने से बचे उसमें तेज गंप आने लगे और मूँषा मुश्किल हो जाए तो समझ से कि जीएपी असली है दूसरी विधि में जीएपी के कुछ दानों को गर्म तरे पर रखे तबे पर दाने अपने आकार से

फूल जाते हैं तो समझे कि यह असली जीएपी है इसी प्रकार से येटात के कुछ दानों को नम करे देस्ता करने पर यह यह दाने आपस में जांते चिपकते हैं तो असली है दूसरी विधि में पोताश को पानी में भोजने पर इसका लाल भाग चानी के ऊपर तैता रहता है डॉक्टर खलील खान ने बताया कि इसी प्रकार गिंक सूलफेट वही जीएपी के बोतल में बित्ताने से यक्केदार अवच्छेप बन जाता है तो समझ से कि असली है इसी प्रकार मुख्य फास्फेट उर्वरक की भी पहचान करने इसके कुछ दानों को गर्म तरे पर रखें और यदि यह नहीं फूलते हैं तो असली है डॉक्टर खान ने बताया कि खेती-बाजी में उर्वरकों का आगना विस्तृत यहां है इसमें फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में मदद बित्तानी है उन्होंने किसान खाइयों से असेल की है कि वे उर्वरक सुरक्षित समय उर्वरक विव्रेता से रखी रखें।

शनिवार • 03.07.2021

kanpur.amarujala.com

05

यूरिया-डीएपी असली या नकली, घर में ही करें पहचान

कानपुर। अब असली और नकली उर्वरकों की पहचान किसान घर पर ही कर सकेंगे। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने शुक्रवार को एडवाइजरी जारी कर पहचान के तरीके बताए हैं।

बताया कि असली **सीएसए के** यूरिया के दाने **वैज्ञानिक ने** सफेद चमकदार **जारी की** और एक समान **एडवाइजरी** आकार के होते हैं। इसके दाने

पानी में पूरी तरह घुल जाते हैं और इसके घोल को छूने पर ठंडा महसूस होता है। इसके अलावा यूरिया के कुछ दानों को गर्म तवे पर रखने से ये पिघल जाते हैं। आंच तेज कर दें तो कोई अवशेष नहीं बचता है। इसी तरह डीएपी के कुछ दानों को हाथ में लें और चूना मिलाकर मलने से यदि उसमें तेज गंध आने लगे और सूंघना मुश्किल हो जाए तो समझ लें कि डीएपी असली है।

इसके अलावा डीएपी के कुछ दानों को गर्म तवे पर रखें, यदि दाने फूल जाएं तो समझें डीएपी असली है। इसी प्रकार से पोटाश के कुछ दानों को नम करें, ऐसा करने पर दाने आपस में चिपके नहीं तो समझें पोटाश असली है। (संवाद)



आर.एन.आई.नं.: UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय दिनी दिनिक

सत्ता एक्सप्रेस

दी.ए.वी.पी. नई डिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा प्रियापन मान्यता प्राप्त

मर्ग: 12 अंक: 239

चानपुर बेहार, राज्यांक ०३ जुलाई २०२१

Email: sattaaexpress@rediffmail.com

किसान कोना : असली एवं नकली उर्वरकों की घरेलू स्तर पर पहचानःडॉ खलील खान



चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर.सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में दिनांक २ जुलाई २०२१ को मृदा वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ खलील खान ने कृषक भाइयों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि असली एवं नकली

उर्वरकों की पहचान घरेलू स्तर पर स्वयं कृषक भाई कर सकते हैं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि खरीफ का मौसम चल रहा है। ऐसे भी किसान भाई खरीफ की फसलों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं इसलिए जरूरी है कि किसान भाई रासायनिक उर्वरकों को जांच परखा लें। तत्पश्चात फसल में प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि असली यूरिया के दाने सफेद चमकदार और एक समान आकार के होते हैं। इसके दाने पानी में पूरी तरह घुल जाते हैं। इसके घोल को छूने पर ठंडा महसूस होता है। तो यह समझ लेना चाहिए कि यूरिया असली है। अथवा यूरिया के कुछ दानों को गर्म तवे पर रखने से दाने पिघल जाते

हैं। आंच को तेज कर दें तो इसका कोई अवशेष नहीं बचता है तो किसान भाई समझ लें की ये असली यूरिया है। इसी तरह से डीएपी के कुछ दानों को हाथ में लेकर उसमें चूना मिलाकर मलने से यदि उसमें तेज गंध आने लगे और सूंधना मुश्किल हो जाए तो समझ ले कि डीएपी असली है। दूसरी विधि में डीएपी के कुछ दानों को गर्म तवे पर रखें तबे पर दाने अपने आकार से फूल जाते हैं तो समझे कि यह असली डीएपी है। इसी प्रकार से पोटाश के कुछ दानों को नम करें ऐसा करने पर यह यह दाने आपस में नहीं चिपकते हैं तो असली है। दूसरी विधि में पोटाश को पानी में घोलने पर इसका लाल भाग पानी के ऊपर तैरता रहता है।